Part-3
Class-VIII
Sub. Sanskrit

VIJAYANT
PAGE NO.: 1
DATE: 26 04 2020

व्याकरण

सन्धि परिचयः

परिभाषा -> दो शब्दों के अत्याधिक पास आने पर पहले शब्द के अन्तिम वर्ण तथा दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण के मेल से जो परिवर्तन अथवा विकार आता है, उसे सन्धि कहते हैं।

सन्धि के भेद -

1- स्वर सन्धि
2- व्यंजन सन्धि
3- विसर्ग सन्धि

स्वर सन्धि:- जब स्वर का स्वर से मेल होता है।

स्वर सन्धि के भेद -

1) दीर्घ सन्धि
2) गुण सन्धि
3) यण सन्धि
4) वृद्धि सन्धि
5) अयादि सन्धि

1) **दीर्घ सन्धि:-** ह्रस्व / दीर्घ स्वर + समजातीय अर्थ दीर्घ सन्धि में समान स्वर होते हैं।

जैसे- अ + आ
ई + इ
ऊ + उ

उदाहरण-

पुस्तकालयः - पुस्तक + आलयः (अ+आ)
विवेकानन्दः - विवेक + आनन्दः (अ+आ)
विद्यालयः - विद्या + आलयः (आ+आ)
देवालयः - देव + आलयः (अ+आ)

अ + आ = आ
आ + आ = आ

नदीशः नदी + ईशः
ई + ई = ई

(२) गुणसन्धि-

अ/आ + इ/ई = ए
अ/आ + उ/ऊ = ओ
अ/आ + ऋ/ॠ = अर्
अ/आ + ऌ = अल्

उदाहरण-

महेशः - महा + ईशः (आ+ई=ए)
देवेशः - देव + ईशः (अ+ई=ए)
सूर्योदय - सूर्य + उदयः (अ+उ=ओ)
महोदयः - महा + उदयः (आ+उ=ओ)
देवर्षिः - देव + ऋषिः (अ+ऋ=अर्)
महर्षिः - महा + ऋषिः (आ+ऋ=अर्)
तवल्कारः - तव + ऌकारः (अ+ऌ=अल्)

रचना चतुर्वेदी